International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बाजार में रामघन

कहानी– समीक्षा डॉ. ब्रिजिट जोसफ

श्रेष्ठ कलाकार कैलाश बनवासी की रचना बाजार में रामघन वर्तमान बाजारी समस्या की ओर प्रकाश डालने वाली समकालीन कहानी है। हम जो बाजारी युग में जी रहे हैं उसके कई पक्षों को लेखक ने हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

बत्तीस साल के रामघन गरीबी में अपना जीवन बिता रहा है। घर के सदस्यों की देखभाल करने के लिए वह और पत्नी कड़ी मेहनत करते हैं।

घर में उसकी माँ, भाई मुन्ना के अलावा दो बैल भी हैं। बैल उसके पिता के खरीदे हुए हैं, तब से वह उनका पालन–पोषण करता है। मुन्ना तो इन बैलों को बेचने का सुझाव देता है तो इसमें हम दोष नहीं देख सकते। बेरोजगार मुन्ना कोई धन्धा करना चाहता है, तो इसके लिए पैसा चाहिए। आजकल के युवापीढ़ी का प्रतिनिधि है मुन्ना। हरेक की तरह वह भी आगे बढ़ना चाहता है। इसमें कोई बुराई नहीं है ।

दूसरी तरफ रामघन तो पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधि है। बैलो के साथ उसका जो आत्मसबंध है वह कहानी में द्रष्टव्य है। वह मोल भाव का बहाना करके बैलों को लेकर बाजार जाता है, लेकिन बिना बेचे लौट आता है इस बार भाई– भाई के बीच झगड़ा होता है। मुन्ना की राय यही है कि खेती – किसानी के दिन छोड़कर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बैलों से कोई फायदा नहीं। फिर इनको खाना देकर क्यों पाल रहे हो खेती का काम

ट्रैक्टर से भी कर सकता है। इसी झगड़े के कारण अब रामघन बैलों को बेचने बालोद के बुघवारी बाजार में आया है।

बैलों के साथ रामघन के आत्मसंबध का चित्रण भी बखूबी से हुआ है। खेत जोतना, बैलगाड़ी में फांदना, उनसे काम लेना, उनको दाना– भूसा देना, उनको नहलाना–धुलाना सब रामघन ही करता है। इतना ही नहीं बैलों के बीमार पड़ने पर अपने संगों की तरह इलाज के लिए दौड– भाग करना भी रामघन का कर्त्तव्य है। बैल उसके सुख– दुख को समझते हैं बिलकुल अपने बच्चों की तरह। इसलिए उसे बैलों से बड़ा लगाव है।

रामघन तो बैलों को घर की इज्जत मानता है किसान के घर में बैल होना चाहिए यही उसकी राय है। वे घर के सदस्य हैं। जो भी रुखा– सूखा खाना मिलता है, उसी में खुश रहते हैं। बैलों को बाजार में लाने के बाद वह अधिक दाम लगाके इनको बेचने से पीछे हटता है। अतरू वह इनको बेचना नहीं चाहता ।

बाजार से लौटते वक्त रामघन और बैलों के बीच जो मौन बातचीत हो रही है, वह हृदयस्पर्शी ही है। लौटते वक्त ऐसा जान पड़ता है कि वे, दो बैल और रामघन नहीं, आपस के तीन गहरे साथी आ रहे हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 4, April 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बेचारे बोल नहीं पाते, उनकी आँखें बोल रही हैं। ध्यान से देखने पर मालूम होता है कि वे आपस में बाते कर रहे हैं। बैल पूछते हैं कि अगर अधिक दाम मिलते तो हमें बेच देते क्या? रामघन का जवाब है– नहीं।

कथाकार पाठकों से यही सवाल पूछता है कि क्या आप बैलों के गले की घण्टियो की आवाज सुन रहे हैं? यह घण्टियो की आवाज नहीं । ध्यान से सुनने पर पता चलेगा कि मानव की तरह वे भी रामघन से बाते कर रहे हैं। वास्तव में यह एक चमत्कार ही है ।लेखक यह व्यक्त करने में सक्षम है कि रामघन ओर बैलों का आत्म–संबन्ध उतना ही दृढ है जितना पिता और बेटे का अनश्वर संबन्ध।